8

सामाजिक सरोकार के मुद्दे और विद्यालय की अधिगम-संस्कृति

ऋषभ कुमार मिश्र*
रवनीत कौर **

यह लेख नई तालीम के सिद्धांत पर संचालित आनंद निकेतन विद्यालय के वृत्त अध्ययन पर आधारित है। इस पर विद्यालय में सामुदायिक-स्थानीय समस्याओं को विद्यालयी पाठ्यचर्या का अंग बनाया जाता है। इस दौरान विद्यार्थियों और शिक्षकों को प्रत्यक्ष भागीदारी द्वारा वास्तविकता समस्याओं को समझने का अवसर दिया जाता है। स्कूल, शिक्षक, विद्यार्थी और समुदाय के लोग सीखने की प्रक्रिया में शामिल रहते हैं। यह लेख विवेचना करता है कि ये संलग्नाताएं कैसे विद्यार्थियों को विषय ज्ञान देने के साथ-साथ बदलाव का कर्ता बनाती हैं? कैसे उन्हें विकल्पों को खोजने और हस्तक्षेपों को धरातल पर उतारने का साहस देती हैं?

अकसर सुझाया जाता है कि सामुदायिक-स्थानीय समस्याओं को विद्यालयी पाठ्यचर्या का अंग बनाना चाहिए लेकिन इस तरह के बहुत कम प्रयोग देखने को मिलते हैं। कक्षा में हमारा ज़ोर विषय ज्ञान को बताने पर या कुछ गतिविधियों के माध्यम से संकल्पना की जटिलता को सरल करके प्रस्तुत करना होता है। यदि उदाहरण के तौर पर, सामुदायिक स्थानीय समस्याओं का ज़िक्र भी होता है तो उसे विषयज्ञान अनुप्रयोग के स्तर तक सीमित रखा जाता है। इस संदर्भ में हमारी शिक्षणशास्त्रीय मान्यता होती है कि जब विद्यार्थी सूचनाओं को जानते हैं तो वे समस्या 'समझने' लगते हैं। जब उन्हें समस्या समझ में आ जाती है तो विद्यार्थी जागरूक भी हो जाते हैं। विद्यार्थियों की जागरूकता उन्हें समस्या के समाधान के लिए अभिप्रेरित करती है। 'पर्यावरण प्रदूषण' 'जल संकट का निवारण' जैसे विषयों पर बच्चे रचनात्मक निबंध तो लिख लेते हैं लेकिन अपने आसपास और रोज़मर्रा के जीवन में खुद की भूमिका के प्रति सचेत हों ऐसा आवश्यक नहीं है। तो क्या करें? इसका एक उपाय 'आनंद निकेतन'[1] विद्यालय द्वारा किए जा रहे प्रयोगों में देखने को मिलता है। इन प्रयोगों की सैद्धांतिक जड़ें निर्माणवाद-आधारित खोज विधि, आलोचनात्मक

* *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, स्कूल ऑफ़ एजुकेशन, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
** *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, माता सुंदरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

[1] वर्धा ज़िले के सेवाग्राम परिसर में स्थित विद्यालय जो नई तालीम के सिद्धांतों पर संचालित है। यहाँ आसपास के गाँवों के करीब 300 विद्यार्थी पढ़ने आते हैं।

नोट– यह कार्य रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा अनुदानित शोध परियोजना के अंतर्गत पूर्ण किया गया है।

© NCERT not to be republished

शिक्षणशास्त्र, स्थान आधारित शिक्षा जैसे उपागमों में खोजी जा सकती है। तो आनंद निकेतन की अधिगम संस्कृति का मुख्य पक्ष समुदाय के साथ भागीदारी के द्वारा सीखना है। इसकी शुरूआत सवालों से होती है। यहाँ शिक्षक और बच्चे अपने समुदाय-गाँव, मुहल्ले, कस्बे को उसकी विशेषताओं के सापेक्ष विवेचित नहीं करते बल्कि वे सवाल पूछते हैं कि जो दिख रहा है वह वैसा ही क्यों है? क्या यह दिखने वाली सच्चाई ही वास्तविक है या उसके पीछे 'कुछ' और है। यह दिखने वाली सच्चाई उनके परिवेश की होती है जिसे वे समग्र रूप से विवेचित करते हैं। यह विवेचना केवल उन्हें ज्ञानार्जन का सुख नहीं देती बल्कि बेचैन भी करती है कि वे अपने ज्ञान से कैसे बदलाव के कर्ता बने? कैसे विकल्पों और हस्तक्षेपों को धरातल पर उतारें? यह लक्ष्य वे केवल स्कूल की दीवारों के भीतर और स्कूल के कर्ताओं की मदद से नहीं प्राप्त कर सकते हैं। उन्हें बाहर जाकर अपनी जैसी सोच रखने वालों के साथ मिलकर काम करना होगा। यह मान्यता विद्यालय-समुदाय के संबंध को घनिष्ठ करती है। यह घनिष्ठता ज्ञान देने वाले या लेने वाले की नहीं होती है बल्कि पारस्परिक होती है। स्कूल, शिक्षक और बच्चे अपने परिवार, दोस्तों और समुदाय के अन्य लोगों को सीखने की प्रक्रिया में शामिल करते हैं। इस प्रक्रिया में सभी साथ मिलकर समस्या की पड़ताल करते हैं। कार्ययोजना बनाते हैं और इसके प्रभाव का आकलन करते हैं। अंततः अपने विचारों और कार्यों से सार्थक प्रभाव छोड़ते हैं। आनंद निकेतन के प्रयोग केवल स्थानीय समस्याओं के प्रति एक्शन रिसर्च नहीं हैं बल्कि इन प्रयोगों में वैश्विक बदलाव व प्रभाव, परिस्थितियों का मूल्यांकन, भविष्य के प्रभाव का आकलन शामिल रहता है। ये प्रयोग प्रगतिशील स्कूलों की तरह 'दुनिया को जानने', रोमांच खोजने, अपने से भिन्न लोगों के प्रति सहानुभूति विकसित करने जैसे नहीं होते। बल्कि स्कूल नियोजित करता है कि जटिल जान पड़ने वाली समस्याओं को बच्चों तक कैसे पहुँचाए? जब बच्चों तक बात पहुँचाई जाए तो वे कैसे अपनी दुनिया को इस नये नज़रिए से देखें? नज़रिए का बदलाव इतना आसान कार्य नहीं है। इसके लिए केवल किसी नई सूचना को जानना पर्याप्त नहीं है जब तक कि यह स्पष्ट न हो कि इस सूचना का व्यक्ति और उसके जीवन के लिए महत्वपूर्ण अन्य घटनाओं और लोगों से क्या संबंध है? नई व्याख्या और नए अर्थ के क्या मायने हैं? वे उसकी मदद से अपनी दुनिया को कैसे समझें? इस दुनिया के लिए अपनी भूमिका का निर्धारण और निर्वहन कैसे करें? आनंद निकेतन की अधिगम संस्कृति की उपर्युक्त विशेषताओं को दो वृत्त अध्ययनों से समझते हैं।

तेल स्वराज अभियान

आनंद निकेतन हर वर्ष बच्चों और शिक्षकों के साथ एक ऐसी परियोजना करता है जिसमें बच्चे और शिक्षक, समुदाय से सीखते हैं और समुदाय को सिखाते हैं। पिछले सत्र में विद्यालय ने खाद्य तेल के प्रयोग को परियोजना के लिए चुना। इस विषय के चुनाव के बारे में विद्यालय की प्रधानाध्यापिका बताती हैं कि उन्होंने और उनके शिक्षक साथियों ने तय किया कि स्कूल को ग्रामोद्योग पर आधारित परियोजना करनी चाहिए। इस मंशा से जब वे मगन संग्रहालय की संचालिका से मिलीं तो उन्हें 'तेल स्वराज अभियान'

© NCERT not to be republished

के बारे में पता चला। तेल स्वराज अभियान का उद्देश्य वर्धा और उसके जैसे अन्य गाँवों को सोयाबीन तेल और पॉम आयल की कृत्रिमता से परिचित कराना, स्थानीय तेल बीजों के महत्व को बताना, तेल के उत्पादन में ग्रामोद्योग की प्रासंगिकता का प्रमाण देना और स्वास्थ्य पर खाद्य तेल से होने वाले लाभ-हानि को बताना था।

आनंद निकेतन के शिक्षकों ने मिलकर तय किया कि इस वर्ष वे इसी विषय को परियोजना के लिए चुनेंगे। इस परियोजना के दौरान विद्यालय ने ग्रामोपयोगी विज्ञान केंद्र, मगन संग्रहालय, ग्राम सेवा मंडल के साथ मिलकर कार्य किया। सर्वप्रथम शिक्षकों ने मगन संग्रहालय की संचालिका के मागदर्शन में विषय का अवबोधन किया। संचालिका ने अपने व्याख्यान में खाद्य तेल के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव, स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, तेल के व्यापार पर वैश्विक दबावों की विस्तृत व्याख्या की। उन्होंने विषय से जुड़ा प्रमाणिक साहित्य भी उपलब्ध कराया। इसमें पर्यावरणविद् और सामाजिक कार्यकर्ता वंदना शिवा के लेख थे। इसके साथ ही इसमें नवधान्य नामक स्वयंसेवी संगठन द्वारा सरल भाषा में लिखी किताबें थीं। विषय को समझने के बाद विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों ने बच्चों के साथ इस योजना का क्रियान्वयन कैसे करना है? इस पर विचार किया। इस परियोजना में कक्षा 9 के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। विज्ञान के शिक्षक ने रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान की अवधारणाओं के साथ तेल बीज और गैर-तेल बीज में अंतर बताया। इस अंतर की तेल की रासायनिक संरचना और उसके स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के आधार पर चर्चा की गई। इसके लिए मेडिकल विशेषज्ञों द्वारा तैयार वीडियो भी दिखाए गए। सामाजिक विज्ञान की कक्षाओं में बाज़ार की ताकतों ने तेल उत्पादन के ग्रामोद्योग को कैसे नुकसान पहुँचाया? सस्ती कीमत के लालच में कैसे उत्पादन की गुणवत्ता का नुकसान होता है? इन प्रवृत्तियों से खेती और किसान कैसे प्रभावित होते हैं आदि विषयों की चर्चा शामिल थी। इसके बाद तेल उत्पादन की स्थानीय स्थितियों के आकलन के लिए बच्चों और शिक्षकों ने ग्रामोद्योग केंद्र का भ्रमण किया। वहाँ उन्होंने तेल बीज से तेल के उत्पादन के बारे में जाना। विषय को जानने के बाद बच्चों ने समुदाय के खाद्य तेल उपभोग की प्रवृत्ति को जानने के लिए प्रश्नावली बनायी और समुदाय के सदस्यों का साक्षात्कार भी लिया। एक विद्यार्थी को कम से कम दो व्यक्तियों का साक्षात्कार लेना था। इस अभ्यास के बाद शिक्षिका के साथ मिलकर बच्चों ने आँकड़ों का विश्लेषण किया। इस विश्लेषण में यह तथ्य उभर कर सामने आया कि रसायन जनित तेल के सस्ते होने के कारण इसका उपभोग अधिक होता है। इस विषय पर बच्चों और शिक्षकों ने समाधान के रास्तों पर विचार किया और समुदाय को भी इससे परिचित कराया। विशेष यह रहा कि बच्चों ने रसायन जनित तेल की उपभोग की आदतों पर नियंत्रण, तेल बीज की खेती को बढ़ावा देना, इसके सह-उत्पाद से लाभ कमाने जैसे प्रायोगिक और प्रासंगिक सुझाव तैयार किए।

इस पूरी गतिविधि में कक्षा को अधिगमकर्ताओं का समूह मानकर उसके साथ कार्य किया गया। यह परियोजना विद्यार्थियों के रोज़मर्रा के अनुभवों और

© NCERT not to be republished

ज्ञान पर आधारित थी। इसके द्वारा विद्यालय और विद्यालयेतर परिवेश में अंतराल को कम किया गया। पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन में सामाजिक-आर्थिक समस्याओं को समझना और समाधान की तत्परता को केंद्र में रखा गया। इस परियोजना के दौरान शिक्षकों और विद्यार्थियों ने तेल के रासायनिक गुणधर्म, मिलावट और उसके स्वास्थ्य संबंधी प्रभावों के बारे में सीखा। विद्यार्थियों ने खोज विधि, समुदाय से संप्रेषण जैसे ज्ञान रचना के तरीकों को आत्मसात किया और इसके माध्यम से अपने संदर्भ की व्याख्या भी की। इस परियोजना में विद्यार्थियों की भागीदारी ने उनके अंदर इस भाव को मज़बूत किया कि वे अपने समुदाय के लिए कुछ कर सकते हैं। उनके विचारों में कर्ता होने के भाव प्रकट हुए—

"मैंने लोगों को जानकारी दी कि सोयाबीन का तेल हानिकारक होता है।"

"मेरे दिमाग में प्रश्न निर्मित हुए कि लोग सोयाबीन का तेल क्यों खाते हैं?"

"जब मैंने यह प्रकल्प किया तो मैंने गाँव के लोगों से बातचीत की और उन्हें काम की बातें बतायीं।"

कर्तव्य का यही बोध उन्हें आम जनता के लिए समाधान का रास्ता खोजने को प्रेरित करता है। इसका एक उदाहरण देखने को मिला जब गाँव की घानी में तैयार तेल की कीमत अधिक होने और सोयाबीन तेल की कम कीमत के बीच चुनाव की स्थिति में विद्यार्थियों ने उपभोग की आदतों में बदलाव, उपभोग पर नियंत्रण जैसे वैकल्पिक रास्तों को समुदाय के साथ साझा किया। विद्यार्थियों ने समुदाय के लोगों को उन तरीकों से भी परिचित कराया जिससे वे ग्रामोद्योग केंद्र से सस्ती कीमत पर तेल प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह से सीखने का उद्देश्य केवल जानने तक सीमित नहीं रहा उस जानकारी के आधार पर परिवार और समुदाय में बदलाव लाने का लक्ष्य रखा गया। यह बदलाव रोज़मर्रा की खानपान की आदतों से लेकर सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र तक लक्षित था। इस बदलाव के लिए कही या पढ़ी गयी बात को मान लेने की प्रवृत्ति नहीं थी बल्कि इसे जाँच-परख कर विद्यार्थियों द्वारा देखा गया।

फ्राइडे फ़ॉर फ़्यूचर आंदोलन का स्थानीकरण

स्वीडिश छात्रा ग्रेटा थनबर्ग ने वैश्विक जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में आवाज़ उठाई और फ्राइडे फ़ॉर फ़्यूचर आंदोलन का आगाज़ हुआ। इसका वैश्विक प्रभाव हुआ और दुनिया के हर हिस्से के स्कूल और बच्चे इस आंदोलन से जुड़ने लगे। इस वैश्विक आंदोलन से सेवाग्राम के आनंद निकेतन स्कूल के शिक्षक भी परिचित हुए। शिक्षकों ने तय किया कि इस वैश्विक आंदोलन के स्थानीय संस्करण में आनंद निकेतन शामिल होगा। विद्यालय के शिक्षकों ने आपस में चर्चा की। उन्होंने इस आंदोलन के परिदृश्य पर इंटरनेट से जानकारी एकत्रित की। इसके पीछे की प्रेरणा और कार्ययोजनाओं पर चर्चा की। इस चर्चा के दौरान तय किया गया कि स्कूल के बच्चों को इसमें भागीदार बनाने के लिए दो समूह बनाए जाएँगे। प्रथम, जो अपनी रचनात्मक गतिविधियों के द्वारा स्थानीय पर्यावरणीय समस्याओं को उठाएँगे। इसमें कक्षा 8 से 10 तक के विद्यार्थियों को रखा गया। द्वितीय समूह कक्षा 1 से 7 तक विद्यार्थियों का बनाया गया जो प्रथम समूह की मदद करेंगे और प्रथम समूह के संदेशों का

© NCERT not to be republished

प्रसार करेंगे। जब तक बच्चे विषय को समझ नहीं लेते तब तक उनसे जागरूकता फैलाने की उम्मीद नहीं कर सकते हैं। इसलिए अलग-अलग कक्षाओं को विषय से परिचित कराने की योजना बनायी गयी।

कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों को जल चुके जंगलों की तस्वीर दिखायी गयी। इन तस्वीरों में जले हुए पेड़ और जीव शामिल थे। बच्चों से पूछा गया कि वे इन तस्वीरों में क्या देख रहे हैं? जवाब में आया कि जंगल में आग लगी है। जंगल के जानवर और पेड़ जल रहे हैं। जल कर जानवर पेड़ पर चिपके हैं। अपनी बातें रखते हुए विद्यार्थियों के हाव-भाव खिन्नता और वेदना प्रस्तुत कर रहे थे। बच्चों को कुल 15 चित्र दिखाए गए। इसके बाद उन्हें कहा गया कि वे ऐसी ही परिस्थिति की परिकल्पना करते हुए चित्र बनाएँ। कक्षा 3 से कक्षा 7 तक सभी बच्चों का प्रोजेक्टर से डाक्यूमेंट्री दिखायी गयी। इसमें ब्राजील के जंगलों के जलने और उसके दुष्प्रभावों का उल्लेख था। इसके बाद हुयी चर्चा में सवाल उठे कि जंगल जलता कैसे है? बुझा क्यों नहीं? लोग जानबूझकर जलाते हैं? सरकार क्यों नहीं हस्तक्षेप करती? इस प्रकरण को गंभीर मानते हुए शिक्षिका ने हस्तक्षेप कर पर्यावरणीय समस्याओं के राजनीतिक लक्ष्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कई अन्य संदर्भ और उदाहरण लेते हुए बल दिया कि प्रकृति के दोहन का रास्ता विकास का रास्ता नहीं हो सकता है। कक्षा 8 और कक्षा10 के विद्यार्थियों के साथ समूह चर्चा की गई। उनके सामने प्रश्न रखा गया कि वे आने वाली पीढ़ी के लिए क्या छोड़कर जाना चाहेंगे। इस सवाल के उत्तर में जवाब आए—पक्षियों की चहचहाट, वनस्पतियाँ, शाम की चौपाल (हमारे पूर्वज मिलकर बातचीत करते थे और समस्या का हल खोजते थे। यह तरकीब भविष्य में काम आएगी), किसान (जब किसान नहीं रहेगा तो फसल कौन उगाएगा? जल, जीव और वनस्पति की रक्षा कौन करेगा), कपास, खेत, स्वच्छ समुद्र, हरी सब्ज़ी, चरखा, खनिज तेल, नदी, जंगल मिट्टी। विद्यार्थियों को इन जवाबों को याद रखने के लिए कहा गया। इन्हें तीन समूहों में वर्गीकृत किया गया। एक समूह को अगले दिन होने वाले प्रदर्शन के लिए संगीत तैयार करना था। दूसरे समूह को नाटक और तीसरे समूह को पोस्टर निर्माण करना था। प्रत्येक समूह के बच्चों ने अपने-अपने काम की ज़िम्मेदारी पूरी की। संगीत समूह ने तीन गानों को तैयार किया। नाटक समूह ने सामाजिक कार्यकर्ता के मार्गदर्शन में नाटक तैयार किया। तीसरे समूह ने विद्यालय के साथ काम करने वाले कार्यकर्ता के साथ मिलकर पोस्टरों का निर्माण किया।

एक दिन विद्यालय के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने समुदाय और आसपास के अन्य स्कूलों से संपर्क करने का फैसला किया। सबसे पहले वे लोग सेवाग्राम आश्रम गए। यह आश्रम वर्धा का लोकप्रिय स्थान है जहाँ प्रतिदिन बड़ी संख्या में दर्शक आते हैं। यहाँ स्कूल के विद्यार्थियों ने दर्शकों के बीच नाटक की प्रस्तुति की।

बच्चों ने एक गोल घेरा बनाया। गोले के केंद्र में दो विद्यार्थी ग्लोब पकड़ कर खड़े हुए। एक विद्यार्थी को धागे का गुच्छा दिया गया। धागे का गुच्छा एक ही था लेकिन उसमें अलग-अलग रंग के धागे जुड़े

© NCERT not to be republished

थे। इन अलग-अलग रंग के धागों को लेकर विद्यार्थी परिधि के केंद्र की ओर आते और उस धागे से ग्लोब को बाँधते। वे आने वाली पीढ़ी के लिए जिस संसाधन को छोड़कर जाने की राय रखते थे उसके बारे में अपने मत से दर्शकों को परिचित कराते और धागे को ग्लोब से बाँध देते। इस समूह में कुल 21 विद्यार्थी शामिल थे, जिन्होंने जंगल, गाँव, पानी, बाघ, जानवर, जंगल की विविधता, ओज़ोन परत, नदी, खादी, समुद्र माउंट एवरेस्ट, शुद्ध ऑक्सीजन, पक्षियों की आवाज, खेत, अनाज, प्राकृतिक भोजन, बीज, शुद्ध सुबह और शुद्ध सायंकाल के पक्ष अपनी प्रस्तुतियाँ दी। अपने विचार की प्रस्तुति देने के बाद हर विद्यार्थी शपथ लेता कि उसने जिस संसाधन को भावी पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखने का वचन दिया है, वह उसकी रक्षा करेगा। इसके बाद केंद्र में खड़े दो विद्यार्थियों ने पर्यावरण और फ़्राइडे फ़ॉर.फ्यूचर आंदोलन पर संबोधन दिया और आग्रह किया कि दर्शक भी ऐसे ही संसाधनों की सूची बनाएँ और उसकी रक्षा की शपथ लें।

सेवाग्राम आश्रम में प्रस्तुति के बाद विद्यार्थियों और शिक्षकों का समूह पड़ोस के विद्यालय पहुँचा। समूह ने स्कूल के प्रधानाध्यापक को अपने मंतव्य से परिचित कराया। आनंद निकेतन के बच्चों ने पुनः प्रस्तुति दी। इस प्रस्तुति के दो संबोधनों को देख सकते हैं—

संबोधन 1

साथियो! मेरा नाम आसू है। मैं कक्षा 9 की छात्रा हूँ। आज मैं आपको महत्वपूर्ण बात बताने जा रही हूँ। आज हमारा पर्यावरण खतरे में है। हम अब ज़्यादा इंतज़ार नहीं कर सकते। हमारे पूर्वजों ने हमें एक ऐसी स्थिति में ला दिया है कि पर्यावरण नष्ट होने की कगार पर है। हमने हाल ही में देखा कि अमेजन जंगल में आग लगी थी। इसके पीछे सरकारों का रवैया बहुत ही असंवेदनशील है। हमें अगर बेहतर पर्यावरण नहीं मिला और हम भी आज इसको नहीं बना सकते हैं तो यकीन करिए कि आने वाली पीढ़ी के लिए हम मुसीबत के अलावा कुछ नया नहीं देने वाले हैं। हमें सीखना है और साथ देना है। हम सभी यहाँ पर आए हैं और वादा करने भी आए हैं कि हम अपनी प्रकृति को स्वयं बनाएँगे। महात्मा गाँधी ने भी पहले ही कह दिया था कि प्रकृति को सँभाल के रखना होगा अन्यथा उद्योग को चलाने वाले, बिजनेस करने वाले इस प्रकृति को खा जाएँगे। हमें महात्मा गाँधी के शाश्वत विकास को लेकर चलना होगा।

संबोधन 2

मेरा नाम वैष्णवी है। मैं कक्षा 10 की छात्रा हूँ। साथियो, क्या हमें बिलकुल आश्चर्य नहीं होता कि हमने अपने प्राकृतिक पर्यावरण को नष्ट कर दिया है? और फिर भी हम हाथ पर हाथ रख कर बैठे हैं और कब तक बैठे रहेंगे? मेरा पर्यावरण मेरा नहीं हम सबका है, इसलिए हम सबकी यह ज़िम्मेदारी बनती है कि मिलकर इसको बचाएँ। पर्यावरण प्रदूषण से सिर्फ़ हमें नुकसान हो रहा है। कार्बन डाइऑक्साइड बढ़ने से हमें बीमारियाँ भी हो रही हैं क्योंकि ऑक्सीजन कम मिल रही है। साथ ही हमारे निसर्ग में उपस्थित पक्षी, जीव-जंतु और जलीय जीव के साथ पानी को गंदा किया है। हमने नदियों को गंदा किया है, हमने हवा अशुद्ध कर दी

© NCERT not to be republished

है। साथियो यह करो या मरो जैसी स्थिति हो गयी है। हमें महात्मा गाँधी के नैतिक सिद्धांत को लेकर बिना किसी का नुकसान किये पर्यावरण का रक्षक बनना है जैसा ग्रेटा थनबर्ग कर रही हैं, उसने हमें और पूरी दुनिया को बहुत प्रेरित किया है और एक नई ऊर्जा दी है। इसको बनाए रखना और स्थिति को बेहतर बनाना हम सबका दायित्व होना चाहिए। हमें विश्वास है कि आप पर्यावरण को बचाने में साथ देंगे।

दी गई गतिविधियों को समझें तो यह ज्ञान होता है कि विद्यार्थी अपने गाँव और आसपास के पर्यावरण को लेकर पहले से ही सकारात्मक सोच रखते हैं। यह हस्तक्षेप वृक्षारोपण तक सीमित नहीं है बल्कि वे स्थानीय पारिस्थितिकी विविधता, उस विविधता का अध्ययन और संरक्षण के प्रयास मे भी भागीदार रहते हैं। यद्यपि बच्चों को ग्रेटा थनबर्ग के आंदोलन से अध्यापकों ने परिचित कराया लेकिन बच्चों के साथ जो कार्य योजना बनाई गई वह वैश्विक समस्या के प्रति स्थानीय प्रतिक्रिया थी। इस प्रतिक्रिया में वे विषय को समझने और इससे संबंधित अपनी भूमिका को लेकर कार्य कर रहे थे। यदि उनके द्वारा किए नाटक को देखें तो इसकी विषयवस्तु बच्चे खुद क्या कर सकते हैं? पर केंद्रित थी। जब वे पास के विद्यालय गए तो भी वे अपने जैसे बच्चों से अपनी चिंताएँ साझा कर रहे थे। इस गतिविधि ने विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास किया। उनमें सवाल खड़ा करने की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। वे अपने जैसे अन्य बच्चों को अभिप्रेरित करना चाह रहे थे। वे समाज-प्रकृति और स्वयं के रिश्ते की आत्म-केंद्रित धारणाओं से बाहर निकल रहे थे। यह गतिविधि स्थापित करती है कि विद्यार्थी केवल सूचना को जानने और संरक्षण के उपाय बताने वाले नागरिक नहीं हैं बल्कि वे उस पर चिंतन करने, हस्तक्षेप करने और हस्तक्षेप का प्रसार करने वाले समुदाय के सदस्य हैं।

ये दोनों गतिविधियाँ बताती हैं कि विद्यालय एक ऐसी संस्था हो सकती है जो अपने शिक्षकों और विद्यार्थियों के माध्यम से सामाजिक बदलाव की गुंजाइश को साकार करे। यहाँ केवल भविष्य (नौकरी/जीविका) के लिए उपयोगी ज्ञान और कुशलताएँ ही नहीं सिखायी जातीं बल्कि शिक्षकों और विद्यार्थियों में समुदाय, प्रकृति, व्यक्ति के जीवन में हो रही घटनाओं के तात्कालिक और दूरगामी विश्लेषण की क्षमता दी जाती है। अकसर विद्यालय को बाज़ार और राज्य की शक्तियों के प्रभाव में कार्य करने वाली संस्था मान लिया जाता है। यह प्रयोग बताता है कि कैसे एक विद्यालय स्वतंत्र रूप से अपनी उस भूमिका का निर्वाहन करता है जिसमें वह शोषण और ज्ञान के वर्चस्व के खिलाफ़ खड़ा है। इससे यह भी समझ में आता है कि शिक्षक केवल पढ़ने-पढ़ाने का काम करने वाले लोग नहीं हैं वे खुद भी लगातार सीखते रहते हैं। सीखने की इस प्रक्रिया में स्कूल के बाहर की सक्रिय इकाइयाँ भी शामिल रहती हैं। यह सीखना जानने के बदले करने वाले नागरिकों का वर्तमान और भविष्य निर्मित करता है। कुल मिलाकर देखा जाए तो इन गतिविधियों के माध्यम से स्कूल ने शिक्षकों और विद्यार्थियों को मौके मिले—

© NCERT not to be republished

- उनके स्थानीय पर्यावरण और समुदाय की दिखने वाली (अवलोकनीय) और न दिखने वाली 'सच्चाइयाँ' क्या हैं?
- इन सच्चाइयों के बीच जीवन की कौन-सी चुनौतियाँ हैं? ये चुनौतियाँ कैसे सामाजिक-आर्थिक स्तर द्वारा निर्देशित हैं? और इसके क्या परिणाम हैं?
- इन स्थितियों में बदलाव के लिए क्या और कैसे किया जा सकता है?
- वे अपनी सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक विरासत के लिए क्या कर सकते हैं?
- समुदाय के लिए, समुदाय की आवाज़ को सशक्त करने के रास्ते क्या हैं?

© NCERT not to be republished